Mayanka Sharma
Prathmik Vidyalaya, Chanepur
District Mainpuri, Uttar Pradesh
Email id: p.s.chanepur@gmail.com, s.mayanka@gmail.com

Abstracts

This is a small primary school which caters to students from low socio-economic background. It has only three rooms. There are many challenges in running this school such as unwanted use of school ground by the community, prevalence of child labour, casteism and untouchability. The school head and her team has worked diligently with autistic children and developed strategies for tackling child labour, while integrating these out-of-school children with mainstream education. She motivated parents to send their children to school and developed the belief in them to consider their autistic child special. Started stationery shop, creative corner and different activity based programmes to promote introvert, economically weak and autistic students to communicate with everyone. This helped boost self-confidence of students and decreased student absenteeism. The school head also arranged for skill development programme to motivate mothers of students in her school.

शाला का सन्दर्भ : सामाजिक-आर्थिक सन्दर्भ

उत्तरप्रदेश के मैनपुरी जिले का एक छोटा सा विद्यालय प्राथमिक विद्यालय चनेपुर छबिलेपुर अतिविषमताओं से घिरा हुआ विद्यालय था विद्यालय के तीन कमरों को लोग सार्वजानिक संम्पति समझते यहाँ का छोटा सा ग्राउंड लोगो के जानवरों के जानवरों का सुरक्षित स्थान हुआ करता था लोग यहाँ क्रिकेट खेलते यहाँ की बिल्डिंग को नुकसान पहुचाते और विद्यालय की छते अराजक लोगों के जुआ खेलने का अड्डा और शायद पुलिस से बचने का भी होती थी। गांव चनेपुर छबीलेपुर आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक रूप से बहुत ही पिछड़ा हुआ गांव है इसका अनुमान आप इसी बात से लगा सकते हैं कि अभी तक इस विद्यालय तक जाने के लिए कोई सड़क नहीं है।

सामाजिक वातावरण भी बहुत बेहतर नहीं है क्योंकि यह एक आपराधिक पृष्ठभूमि का गांव है। अधिकतर लोग चरस, गांजे और शराब जैसे नशों के आदि हैं। यहाँ रोज कोई न कोई आपराधिक गतिविधि सुनने देखने को मिल जाती है।

लोगो के पास कमाई का बहुत अच्छा साधन भी नहीं है यहाँ खेती कुछ सीमित लोगो के पास ही है शेष कमजोर तब का इन के खेतों में मजदूरी करता है जब खेतों में काम नहीं होता है तो ये जंगलों में लकड़ी बीनते या ये लोग ईट भट्ठों की ओर निकल पड़ते हैं दो रोटी की जुगाड़ में।यहाँ के लगभग 60 प्रतिशत लोग मजदूरी करते हैं।यही कारण यहाँ के बच्चों को भी इनके साथ मजदूरी करनी पड़ती है।

बाल श्रम भी यहाँ एक बीमारी एक नशा जैसा है बच्चों के लिए.. पूरे दिन खेतों पर काम करना कुछ पैसे कमाना और अपनी छोटी छोटी जरूरतों को पूरा करना उनकी स्कूल से दूरियां बढ़ाता है साथ साथ कुछ पैसे हाँथ में होने के कारण वो काम उम्र में ही गलत आदतों केशिकार हो जाते हैं। यहाँ महिलाओं की स्थिति भी सोचनीय है। जातिपात और भेदभाव जैसी समस्या भी यहाँ के विकास में बाधक है।

ऐसी परिस्थितियों में अगर सबसे ज्यादा कुछ बाधित होता है तो मासूमो का बचपन और उनकी शिक्षा या तो उन का बचपन ईंट भट्टो पर गुजर जाता है या खेतो में मजदूरी कर के।।

इस विद्यालय में एक शिक्षक के लिए जितनी चुनौतियाँ है उतनी ही छात्रों के लिए भी क्योंकि उन्हें ऐसे परिवेश में बढ़ना भी, पढना भी है और उसका हिस्सा होते हुए उसमें परिवर्तन भी करना है।।। समुदाय की मानसिकता शिक्षकों को लेकर नकारात्मकता से भरी थी।

परिवर्तन के मुद्दे/चुनौतियां

विद्यालय के सामने जातिपात, छुआछूत, बेरोजगारी, बालश्रम, ऑटिस्टिक बच्चों की शिक्षा, बालिकाओं की शिक्षा, ईटभट्ठे पर जाने वाले परिवारों को रोकना तथा बच्चों को शिक्षा से जोड़ना आदि कई चुनौतियां हैं जो बच्चों की शिक्षा में बाधक हैं।

बाल श्रमिक बच्चों की शिक्षा---

बालश्रम-हमारी सबसे बड़ी समस्या थी क्योंकि। इससे बालक और बालिका दोनों की शिक्षा प्रभावित थी बालक अभिभावक के साथ काम पर जाते और बालिकाएं घर का काम करती।। अभिभावक उन का नाम तो स्कूल में लिखवाते थे पर बच्चे स्कूल आते नहीं थे। स्कूल के अन्य बच्चों से पता किया तो पता चला की वो सब काम करने जाते हैं कहाँ खेतों पर, कोल्डस्टोरेज पर या लकड़िया बीनने।। इससे बालक और बालिका दोनों की शिक्षा बाधित हो रही थी। दशाये की जिस बच्चे का नाम कक्षा 5 में लिखा था वो वर्णमाला नहीं जानता था। चुनौती बड़ी थी क्योंकि एक तरफ रोटी का सवाल था एक तरफ शिक्षाका।। दोनों ही आवश्यक अंग है जीवन का।

ऑटिस्टिक बच्चों की शिक्षा–

यहाँ कई बच्चे ऐसे पाए गए जो आटिज्म का शिकार थे क्योंकि यहाँ लोगो में महिला शिक्षा और उनके पोषण को ले कर जागरूकता कम है जिसकी वजह से जन्म लेने वाले बच्चे कई समस्यायों से घिरे होते हैं। जिन्हें समाज मंद बुद्धि समझता है। उन पर हँसता है और उन्हें उनके हाल पर छोड़ देता है हमने

प्रवेश अभियान के दौरान जब हमने देखा कुछ बच्चे 6 साल के ऊपर है पर विद्यालय नहीं आते

अभिभावकों से बात करने पर उन्होंने बताया" अरे बहिन जी जे तौक मबुद्धी को है जाये आपका सिखैयो।। अभिभावक का ही अपने बच्चेके लिए ऐसा सोचना विचारणीय था। इन बच्चों को समझना आसान नहीं होता क्योंकि आपके हर सवाल का जवाब इनकी ख़ामोशी होती है। इनकी अपनी एक दुनिया होती है जिसमे ये खोये रहते है यह एक स्वलीनता की स्थिति है जहाँ बच्चे का कोई दोस्त नहीं होता है। लोग उन पर नकारात्मक टिप्पड़ी करते है हंसते है तो वो लोगो के सामने असहज और डर की भावना से भर जाते हैं।

चुनौतियाँ के समाधान की योजना

स्टाफ के साथ मिलकर हमने इन दोनों समस्यायों पर अध्यन किया तो पाया कि इन में सुधार हो सकता है हमने मिलकर इंटरनेट के माध्यम से ऐसे बच्चों के विषय में जानकारियां एकत्र की आपस में बातचीत

के बाद हमने कुछ ऐसी रणनीतियां बनायीं जिससे हमारी दोनों समस्याएं हल होग ईं।

आओ चलो हम बात करें।- कहते है बातचीत हर समस्या का हल हो सकता है तोमें सबसे पहले हमने ऐसे छात्रों के अभिभावकों से बातचीत का माध्यम हमने अपने उन छात्रों को चुना जो बहिर्मुखी थे हम उन से चिन्हित बच्चों के घर पर चिट्ठियां भिजवाते, उनकी प्रतिक्रिया जानते और जब ये पता चलता की वो घर पर हैं तो हम उनके घर पर जाते उन से बात करते। कभी हम उन्हें विद्यालय की गतिविधियों और आयोजनों में आमंत्रित करते ताकि वो अपने बच्चों को शिक्षा से जोड़े।

कई बातचीतों के बाद कुछ लोगों ने अपने बच्चे विद्यालय भेजने शुरू किये, हमें सकारात्मक परिणाम मिलने शुरू हुए।

अपने छात्र को जानें- जो बच्चे विद्यालय आने लगे थे अब उन्हें जानना बहुत आवश्यक था क्योंकि विद्यालय आने वाला हर बच्चा अलग होता है वो अलग भावनाएं, अलपारिवारिक मूल्यों को लेकर आता है ऐसे में उन्हें समझने के लिए पहले हमें उनके अंदर झांकना होता है। इसके लिए स्टाफ के सहयोंग से हमने एक स्ट्रेटेजी बनार्यी

आओ अपने छात्र को जानें-इस स्ट्रेटेजी के अंतर्गत हम छात्रों के व्यवहार का अध्यन करते हम उनकी पसंद ना पसंद पर बात करते हम एक दूसरे से यह भी साझा करते की किस छात्र को हमारी कितनी जरुरत है इसमें हम छात्रों का एक SWOT analysis तैयार करते

S--strength of child–छात्र क्या कर सकता है या उसे क्या करने में अच्छा महसूस करता है।

W--WEAKNESS of child ऐसा क्या जिससे वो असहज होता है डरता है ना पसंद करता है।

O--opportunities to improve his behaviour विद्यालय और अन्य छात्र उसे कैसे कैसे अवसर दे

सकते हैं?

T--threats around him..परिवार, समाज, विद्यालय में ऐसे कौन से कारक हैं जो उसके विकास में बाधक हैं।

इस एनालिसिस में पूरे स्कूल से उन बच्चों को टारगेट करते जो सबसे कम प्रदर्शन देते है, बहुत ज्यादा शांत रहते है, अनुपस्थित रहते हैं या हीन भावना में रहते है और अन्य छात्रों से दूरियां बना के रखते है। हम उसके लिए कई अवसर तैयार करते उसको अपनी बात कह पाने का अधिक से अधिक अवसर देते।। उसकी रूचि के अनुरूप उसे विद्यालय की कोई जिम्मेदारी भी देते जैसे पौधों में पानी देना, पौधे लगाना, क्यारी तैयार करना, mdm के समय लाइन लगवाना, हैंडवाश देना, प्रार्थना में लाइन लगवाना आदि।

उनको जिम्मेदारियां देने से उनकी सोच में ये परिवर्तन आया कि वो स्वयं को विद्यालय का उपयोगी अंग मानने लगे।

स्टेशनरी शॉप–गांव में कोई स्टेशनरी शॉप नहीं है इस वजह से अधिकतर छात्र बिना स्टेशनरी के आते थे। फ्री स्टेशनरी प्रोवाइड करना इसका हल नही था। इसमें हमने 2 आर्थिक रूप से अति पिछड़े और 2 ऑटिस्टिक बच्चों को लेकर 500 रुपये की स्टेशनरी उन्हें दी। एक निश्चित स्थान दिया। ये बच्चे इस छोटी सी शॉप को सुबह 10 मिनट चलाते हैं इससे कई उद्देश्य पूर्ण हो जाते हैं एक तो ऑटिस्टिक बच्चे सबसे कम्यूनिकेट करते हैं इससे वो सहज होते हैं इससे होने वाली बचत से गरीब बच्चों की मदद होती है भविष्य को लेकर एक हुनर का सृजन भी होता है। ये गणित की छोटी छोटी व्यवहारिक बातें भी सीखते है।

क्रिएटिव कोना- Creative Corner

बच्चा कोई भी हो उसे सृजनात्मक कार्यों से जुड़ना अच्छा लगता है एक बच्चा बचपन में जो भी क्रिएटिव वर्क करता है उसे वो जीवन भर याद रखता है अतः हमने इस चरण में विद्यालय में एक क्रिएटिव कोना बनाया जिस मे छात्रों को कुछ भी आकर्षक चीजे बनाना सिखाया जाता । इसमें हम आर्ट, क्राफ्ट, सिंगिंग, डांसिंग, पेंटिंग, मेहंदी जैसी गतिविधियों कोशा मिल करते। इस कोने ने बच्चों को बहुत आकर्षित किया और उनकी उपस्थिति बढ़ाई। इन्ही गतिविधियों को और बढ़ावा देने के लिए समरकैंप का आयोजन भी करते। हम कुछ न कुछ रोजन या कराते बच्चों से। बच्चे जाकर गांव में बताते ख़ुशी जाहिर करते ये ख़ुशी माता पिता को आत्म संतुष्टि देती साथ ही साथ वो अगले दिन अपने साथी को भी स्कूल लाते, हर्ष बहु आज कभी कभी यहाँ की गतिविधियों में हिस्सा लेने प्राइवेट स्कूल के बच्चे भी आते।

इस क्रिएटिव कोने ने ऑटिस्टिक बच्चों की भागीदारी भी बढ़ाई वो भी छोटी छोटी गतिविधियों में भाग लेते और सक्रीय होने की कोशिश करते।

गेट वेल सून–Get well soon..हम 3 दिन से अधिक एब्सेंट रहने वाले छात्र के विषय में फ़ोन करके या पडोसी छात्रों से पता करते अगर हमें पता चलता कि कोई छात्र या उसके माता पिता बीमार है तो विद्यालय का कोई न कोई सदस्य कुछ बच्चों के साथ उनको देखने जरूर जाता। इसमें हमारा उद्देश्य उन्हें ये एहसास कराना था कि विद्यालय भी आपका एक परिवार है।इन सब प्रयासों से बच्चों के व्यवहारों में बहुत अच्छे सामाजिक मूल्यों का विकास हुआ।।

खुले वातावरण में गतिविधि अधारित शिक्षा-

बाल श्रमिक बच्चे और ऑटिस्टिक बच्चे क्लास में बैठकर पढना पसंद नहीं करते क्योंकि उन्हें अनुसाशित रहना पसंद नहीं होता हमने उन्हें पहले किसी भी तरह का दबाव नहीं दिया की आपको इस तरह रहना है।।क्योंकि हम अभी उन्हें विद्यालय आना सिखा रहे थे। उन्हें या तो गतिविधि यां पसंद होती हैं या खेल। हम उन्हें ग्राउंड में अन्य छात्रों के साथ खेल खेल में शिक्षा देते।

We want to play with you–

इस स्ट्रेटेजी में हमारा उद्देश्य था छात्रों को अपने निकट लाना। इसमें हम छात्रों के साथ कुछ देर खेल खेलते उनके साथ दौड़ते भागते कभी हारते कभी हराते इससे बच्चों की शिक्षकों से दूरियां कम हुई वो शिक्षको के साथ सहज रहने लगे और उनके मनका सारा डर निकल गया।।

[I

Two minute clapping session-

हमारी इस स्ट्रेटेजी ने हमें चौकाने वाले रिजल्ट दिए इस एक्टिविटी में हम छुट्टीके समय उस

बच्चे के लिए जिसने कुछ अच्छे प्रयास करने शुरू किये है जिसने बहुत दिनों बाद विद्यालय आना शुरू किया या पढ़ाई या किसी गतिविधि में कुछ करने का प्रयास कर रहा है उसके लिए सभी बच्चों से 2 मिनट ताली बिना रुके बजवाते । इसके लिए हम अलग से कुछ भी नहीं करते जब बच्चे छुट्टी में बैग लेकर ग्राउंड में होते हैं तभी हम उन बच्चों का नाम बताते जिन्होंने प्रयास करने की कोशिश की। ईससे सभी बच्चे ऊर्जा से भर जाते उनके चेहरे का भाव ये पक्का करता की अब वो कल जरूर आयेगा।अन्य छात्र भी ये सीख रहे थे की प्रोत्साहन और प्रेम से स्थितियां बदली जा सकती हैं।

विशिष्ट TLM निर्माण

हर छात्र की आवश्यकताएं अलग होती अतः हम

कई विशेष प्रकार के ऐसे TLM का निर्माण करते जिन्हें छात्र स्वयं ले कर प्रयोग कर सके हमें उसके रखरखाव की चिंता न करनी पड़े।ये

TLM शून्य निवेश पर आधारित होते और छात्रों के सहयोग से रचनात्मक तरीके से बनाये इसे हम क्राफ्ट से जोड़ देते जिस इसके लिए अतिरिक्त समय नहीं देना पड़ता। इससे अध्यापकों का समय बहुत बचने लगा जिससे बचे समय में हम अधिक से अधिक गतिविधियां और खेल कराते।

बाल सभा का आयोजन–

हर शनिवार को बाल सभा का आयोजन करते हैं ताकि ऐसे छात्रों को अधिक से अधिक अभिव्यक्ति के अवसर मिल सकें। हम टार्गेटेड बच्चों को अन्य छात्रों के बीच बीच में बुलाते हैं ताकि उन्हें ये एहसास न हो की उनके साथ विशेष रूप से व्यव्हार किया जा रहा है। वो छोटी छोटी कविताएं कहते है।

छात्रों और अन्य सहयोगियो की भूमिका-

इस पूरे प्रोजेक्ट में सबसे ज्यादा सहयोग छात्रों का रहा क्योंकि छात्र विद्यालय और समुदाय के बीच की कड़ी होते हैं अतः छात्रों के व्यवहार और सूचना के आदान प्रदान से समुदाय में एक सकारात्मक सन्देश गया।जिससे धीरे धीरे समुदाय ने सहयोग करना प्रारंभ किया। इसमे छात्रों की माताओं का विशेष योगदान रहा क्योंकि उन्होंने अपने बच्चों से सम्बंधित हमें कई महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध करायीं जिससे हमें छात्रों को समझना और भी आसान हो गया। समय समय पर ग्राम प्रधान ने भी अभिभावकों और छात्रों को प्रोत्साहित किया

छात्रों में परिवर्तन/ परिणाम---

1. बच्चों की सोच में शिक्षा को लेकर एक बदलाव आया है।

2. छात्र जिम्मेदार बन रहे हैं वो स्वयं, परिवार, समाज और देश के प्रति अपनी जिम्मेदायों को समझने लगे हैं
3. बच्चे गांव में एक परिवर्तन प्रदर्शित कर रहे हैं जिससे उनके माता पिता उनके भविष्य को लेकर जागरूक हो रहे हैं
4. बच्चों में आपसी प्रेम और सहयोंग बढ़ा है।
5. ऑटिस्टिक बच्चों की सामाजिक और शैक्षिक स्थिति में सुधार हुआ और विद्यालय में उनकी भागीदारी भी बढ़ी।
6. छात्र विद्यालय के कार्यों में शिक्षको का सहयोग करते है।
7. बाल श्रम कराने वाले अभिभावक काम के साथ साथ अब उनकी शिक्षा को भी समय देते।
8. सबसे खास बात तो इस प्रोजेक्ट की ये रही कि हमारे बच्चों ने यह सीख लिया की हालातों से तब कैसे लड़ना है जब हम शून्य पर हों।
9. बच्चे स्वप्रेरणा से कार्य करने लगे।
10. बच्चों ने यह भी सीखा की उनके वातावरण में जोभी संसाधन हैं उनका बेहतर उपयोग कैसे करना हैं।
11. बच्चों को अनुशासन में रहना नहीं पसंद था अब वो रोज के कामों में अनुशासित रहने का प्रयास करने लगे हैं।
12. अधिगम स्तर में विशेष सुधार आया है, छात्र रोज स्कूल आना पसंद करते हैं। प्राइवेट स्कूलों में जाने वाले छात्र भी यहाँ दाखिला लेना चाहते हैं।

तुलनात्मक चार्ट-

	पूर्व स्थिति	वर्तमान स्थिति
छात्र उपस्थिति	40%	80-85%
छात्र पंजीकरण	94	136
अधिगम स्तर	अति निम्न	अच्छा
छात्रों का मानसिक स्तर	औसत	अच्छा
शिक्षकों का रुझान	औसत	बहुत अच्छा
समुदाय का दृष्टिकोण	नकारात्मक	बहुत सकारात्मक
समुदाय का सहयोग	बिलकुल नहीं	अपेक्षाअनुसार
श्रमिक बच्चों का नामांकन	10	35
ऑटिस्टिक बच्चों का नामांकन	2	12
विद्यालय की पहचान	ख़राब विद्यालय	जिले के सबसे अच्छे विद्यालयों में एक
अन्य	कुछ भी विशेष नहीं	सोशल मीडिया के माध्यम से कई प्रदेशों के साथ विदेशों के शिक्षक भी यहाँ की गतिविधयों औ रस्ट्रेटेजीज को फॉलो करते है।

भविष्यकालीन योजनाएँ

लगभग अभी 30 परिवारोंको जो ईट भट्ठों पर जाते हैं उनके बच्चे शिक्षा से वंचित हैं उन्हें स्थानी रोजगार से जोड़ने के लि प्रयास करना किसी संस्था की मदद से उन्हें रोजगार पर प्रशिक्षण दिलाना। इन परिवारकी महिलाओं को छोटे छोटे घरेलु रोजगारों से जोड़ना तथा उनके बच्चों को शिक्षा से जोड़ना ताकि इनकी आने वाली पीढ़ी का बचपन भट्ठों की आग में न जले।

स्वयं की स्कूल लीडर के रूप में भूमिकाएक स्कूल लीडर की तरह मेरा ये बदलाव का सफर आसान नहीं था मेरे पास न अच्छा भवन था न बच्चों की अच्छी शैक्षिक गुणवत्ता थी न समुदाय का सहयोग था न भौतिक संसाधन और नही आर्थिक मदद। मैंने कई लोगों की विरोधी प्रतिक्रियाओं का सामना किया। एक महिला के लिए इतनी विषम दशाओं वाले ग्रामीणरूढ़िवादी क्षेत्र में बदलाव की बात भी लोगों को अजीब लगती थी जो इससे पहले किसी ने नहीं सोची यही कारण था कि यहाँ के लोग शिक्षको को अच्छीदृष्टि से नहीं देखते थे मुझे इस दृष्टिकोण को बदलना था मुझे उन्हें बताना था कि बिना संसाधनों

के भी बदलाव संभव है। सिर्फ अपने प्रयासो से अपने विचारों से .....और मैंने वो कर दिखाया।आज मुझे बच्चों का प्यार मिल रहा है सहयोंग मिल रहा है। यहाँ का समुदाय मुझे सम्मान देता है मेरे प्रयासों को प्रोत्साहन देता है।परिवर्तन तो कई तरह से किये जा सकते हैं पर मैं एक ऐसा उदहारण प्रस्तुत करना चाहती थी जिसका आधार धन नहीं ऊर्जावान प्रयास हों। जो बच्चों में बदलाव का जुनून पैदा करे। जो उनकी सोच को बदले ताकि देश को अच्छे नागरिक मिल सके। जिसे हर विद्यालय सहजता से लागू कर सके।।यह मेरे लिए अति प्रसन्नता की बात है कि विद्यालय की गतिविधियों को विद्यालय के फेसबुक पेज के मध्याम से देश के कई प्रदेशों के साथ साथ विदेशों के शिक्षको ने अपनाया और सराहा है। हमारे प्रयासों को देखकर मध्य प्रदेश की एक कंपनी ने हमें स्मार्ट क्लास के सभी सामान डोनेट किये। जिस से बच्चों की शिक्षाको और भी बेहतर बनाया जा सके।

सफलता सूत्र- अगर हम परिवर्तन लाना चाहते हैं तो हम शुरु आत संसाधनों से नहीं प्रयासों से करे हम जहाँ पर हो जिन संसाधनों के साथ हैं जैसे भी हों अपने प्रयासों से छोटे छोटे परिवर्तनों का उदहारण प्रस्तुत करें जिससे बच्चे उस व्यवहार का अनुकरण करें और वैसाही व्यवहार समाज में करें ताकि समाज उनके व्यवहार का अनुकरण करें यह परिवर्तनकारी सोच एक दूसरे में अच्छे परिणामो को देखकर आगे संचारित होती रहे।

जय हिंद जय भारत

Links- आओ अपने छात्र को जानें।described case study

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=2138085986509054&id=1894252307559091